सफलता की कहानी

ससुराल के जुल्मों का शिकार हुई सुलोचना के जीवन का आधार बना कौशल विकास प्रशिक्षण

कहते हैं – जिनकी रक्षा ईश्वर करता है उन्हें कोई भी बुरी शक्ति हानि नहीं पहुँचा सकती। ऐसी ही एक कहानी है घाटो रामगढ़ के **सुलोचना कुमारी** की। सुलोचना की वर्तमान आयु 26 वर्ष है। महज एक साल पहले सुलोचना ने ब्यूटी एण्ड वेलनेस क्षेत्र में कौशल विकास का प्रशिक्षण लेकर अब रू0 10,000/– मासिक की नौकरी कर रहीं हैं। उसकी यह सफलता किसी खुशनुमा पलों की यादगार नहीं बल्कि एक लंबे संघर्ष की कहानी है।

वर्ष 2008 में दसवीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद सुलोचना का बाल विवाह महज 16 वर्ष की आयु में अपनी उम्र से 15 साल बड़े व्यक्ति के साथ कर दिया गया था। पहले से अपने मायके में पेशे से ड्राईवर पिता के घर दुख और गरीबी का अम्बार झेल चुकी सुलोचना के लिए ससुराल में भी सबकुछ सामान्य नहीं था। दकियानुसी सोच और विचारधारा वाले ससुराल के सद्स्यों के साथ सुलोचना अपना जीवन बसर करने लगी। अपने साथ हो रहे अत्याचारों और आर्थिक तंगी को उसने अपनी नियति ही मान लिया था। समय के साथ सुलोचना दो बच्चों की माँ भी बन गई और आर्थिक हालातों का हवाला देकर पति भी बाहर कमाने चला गया। पति के जाने के बाद अब सुलोचना को बच्चों के साथ ससुराल के घर से भी बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। इन आर्थिक और सामाजिक विडंबनाओं का दंश झेल रही सुलोचना के सामने अब करो या मरो जैसी स्थिति हो चुकी थी। वर्ष 2008 ने कौशल विकास का पैगाम जब बड़े शहरों, जिलों से होते हुए सुलोचना के कस्बे तक पहुँची तो उसे इस अवसर में उम्मीद की एक किरण दिखाई पड़ी। सुलोचना ने वापस लौटकर अपने मायके जाने से अच्छा समझा कि बच्चों के साथ अलग रहकर कौशल विकास का प्रशिक्षण लें। उसने झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी के प्रशिक्षण प्रदाता संस्था प्रथम ब्यूटी ट्रेनिंग केन्द्र के काउन्सलर एवं मोबिलाइज़र से संपर्क स्थापित किया। जिंदगी का यह घटनाक्रम सुलोचना की जिंदगी में एक टर्निंग प्वाईंट साबित हुआ। उसने राँची के काँके स्थित केन्द्र में पूरे तीन माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किया। प्रशिक्षण पूरा होते ही सुलोचना का चयन वर्ल्ड फेम O2 Spa के बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, राँची आउटलेट पर Assistant Beauty Therapist के रूप में हा गया। विगत दिसम्बर 2018 से सुलोचना इस आउटलेट पर जाने माने प्रतिष्ठित लोगों को अपनी कौशल क्षमता से ब्यूटी थेरापी की सेवा दे रहीं हैं। सुलोचना को प्रतिमाह वेतन के अलावा भोजन एवं आवासन की व्यवस्था भी कंपनी के द्वारा किया गया है।

अपनी पैरों पर पूर्णरूपेण खड़ी हो चुकी सुलोचना अब आत्मविश्वास से लबरेज हैं। कभी अपनी जिंदगी से निराश हो चुकी झारखण्ड की यह बेटी अपने दो बेटियों क्रमशः 6 वर्ष के पालन पोषण एवं आरंभिक पढ़ाई का खर्चा स्वयं वहन करती हैं। ना मायके, ना ही ससुराल के सामने अपनी जरूरतों के लिए हाथ नहीं फैलाने वाली सुलोचना की आमदनी भले ही महज रू0 10,000/– हों लेकिन उसने एक आदर्श माँ, एक आदर्श बेटी और एक आदर्श नागरिक होने का कर्तव्य भली–भाँति निभाया है। कौशल विकास मिशन सोसाईटी की ओर से किरण को उनके उज्जवल भविष्य के लिए अन्नंत शुभकामनाएँ !

हुनर है तो कदर है"।